Scanned by CamScanner

इटखोरी

इतिहास, पुराण एवं पुरातत्व के आईने में

सामान्य जनमानस अपने स्थूल नजरों से सामने पड़ी चीजों का ऊपरी अवलोकन करके ही इतिहास या पौराणिकता के संबंध में धारणा बनाता है। लेकिन दृष्टि जब स्थूलता को बेधकर सूक्ष्मता पर केन्द्रित होती है तो विस्मित करने वाले तथ्य सामने आते हैं।

झारखण्ड के चतरा जिलान्तर्गत **इटखोरी** सुप्रसिद्ध पौराणिक – ऐतिहासिक धरोहर है। पुरातात्विक महत्व का यह स्थल प्राकृतिक सुषमा से परिपूर्ण है। इसके कण–कण में गौरवशाली अतीत की अनुगूँज सुनाई पड़ती है। शैव, शाक्त, जैन एवं बौद्ध मतावलंबियों को समाहित करता यह स्थान धार्मिक विविधता,सह–अस्तित्व एवं सहिष्णुता के साथ–साथ सांस्कृतिक एकता का दिग्दर्शन भी कराता है।

1200 वर्षों से भी अधिक प्राचीन पालवंश एवं इससे भी काफी पहले भारत के स्वर्णिम गुप्तकाल, और यहाँ तक कि रामायण एवं महाभारत काल की अनमोल विरासत को अपने प्रभामंडल में समेटे इटखोरी इतिहास, पुराण व धर्म के जिज्ञासुओं, अध्यात्म–साधकों तथा पुरातत्वविदों, कलाकारों तथा प्रकृति–प्रेमी पर्यटकों को नेह–निमंत्रण देता है।

इटखोरी मंदिर–परिसर में पुराणपुरूष राजा सुरथ सुपूजित शक्ति की अधिष्ठातृ माँ भद्रकाली की 9वीं सदी में पालवंश के प्रथम शासक महेन्द्रपाल निर्मित गोमेद पत्थर की भव्य एवं जाग्रत मूर्ति, कला का उत्कृष्ट नमूना है। माँ की प्रतिमा के चरणों के नीचे ब्राह्मी लिपि में (अनुमानतः) उत्कीर्ण है – **महेन्द्रपाल राजे दशमी अनुष्ठान** अर्थात् प्रतिमा का निर्माण कार्य ज्येष्ठ मास की दसवीं तिथि को आरंभ किया। महेन्द्र पाल बंगाल का शासक था जिसका विस्तार मगध तक रहा था और इटखोरी तत्कालीन मगध का अंग था।

यहाँ एक खुला शिवालय है जिसमें सहस्र लिंगम शिव की मूर्ति है जिसमें 1008 छोटे–छोटे शिवलिंग उत्कीर्ण है। शिवालय के बाहर द्वार पर शिववाहन नंदी की एक विशाल प्रतिमा है जो कि एक ही विशाल पत्थर को तराशकर बनाई गई है और नेपाल के पशुपतिनाथ

Scanned by CamScanner

मंदिर के सामने स्थित नंदी के ही सदृश है। मुख्य मंदिर के पश्चिम में एक पाषाणखंड पर जोड़ा चरण–चिन्ह अंकित है। उसी स्थान पर उत्खनन से प्राप्त मंजूषा के अंदर से एक ताम्रपत्र मिला है जिसपर **शीतलनाथ** अंकित है। जैन धर्म–ग्रंथों में 10वें तीर्थंकर शीतलनाथ की जन्मस्थली **भदुली** है। उल्लेखनीय है कि जैन धर्मावलंबी माँ भद्रकाली को **भदुली माता** के नाम से पुकारते हैं।

'इटखोरी' नाम बुद्धकाल से सम्बद्ध है :– इटखोरी का प्राचीन नाम **इतखोई** है। ऐसी मान्यता है कि शाक्य युवराज सिद्धार्थ अपनी जन्मभूमि से **महाभिनिष्क्रमण** कर जीवन के सत्य की खोज में दक्षिण–पूर्व दिशा में बढ़ते हुए मुहाने एवं वक्सा नदियों के संगम स्थित इसी स्थान पर पहुँचकर गहन साधना में लीन हो गये तो उनकी पालनकर्तृ माता (मौसी) महाप्रजापति गौतमी वात्सल्यवश उन्हें वापस लेने आई। परन्तु भूमा के अलौकिक सुख में मग्न एवं निर्वाण मार्ग के पथिक सिद्धार्थ राजपाट, पत्नी यशोधरा और पुत्र राहुल से परे, मोह–माया के इहलौकिक बंधनो से पार निकल चुके थे। विवश ममतामयी माता के मुख से सहसा **इत–खोई** (अर्थात् यहाँ मैं पुत्र खोई) के स्वर निकले जो कालांतर में इटखोरी के रूप में प्रसिद्ध हो गया। यह संयोग है कि कि माता ने यहाँ जिस पुत्र को खोया वही सिद्धार्थ आगे **धर्मचक्र प्रवर्तन** के लिए **गौतम बुद्ध** नाम से जगत् विख्यात हुआ जिसकी प्रथम शिष्या बनी–माता **गौतमी**! इस दृष्टि से यह स्थल सदियों से बौद्धमतावलंबियों के श्रद्धा का महान केंद्र हो गया है। नागपुर के भंते तिस्सावरो की मानें तो बोधगया में ज्ञान प्राप्त करने से पूर्व गौतम बुद्ध चार बार इटखोरी पधारे थे। सम्राट अशोक ने पहला बौद्ध–विहार इटखोरी के **भदुली** में ही बनाया था। इटखोरी मंदिर परिसर में जो विशाल बौद्ध–स्तूप है उसपर भगवान बुद्ध की 1004 लघु एवं चार बड़ी प्रतिमाएँ चार मुद्राओं (अभय, ध्यान, धर्मचक्र एवं भूमि स्पर्श) में उत्कीर्ण हैं जो स्थापत्य कला में अद्वितीय हैं। इसके साथ ही साथ मंदिर के पास **हनुमान मंदिर, करूणामयी माँ मंदिर, रानी पोखर** तथा **कुटेश्वर स्थान का तालाब** इटखोरी के गौरवशाली अतीत के अविरल बखान करते हैं। चतरा में एक **अति प्राचीन गुरुद्वारा** है जो आज भग्नावस्था में है। कोल्हुआ पहाड़ पर

Scanned by CamScanner

माँ कौलेश्वरी का प्राचीन मंदिर अवस्थित है। इसके अतिरिक्त **तमासीन का झरना** एवं समीपवर्ती प्रतापपुर का **बौरा शरीफ** भी दर्शनीय है।

यह तथ्य भी स्मरणीय है कि महान समाज सुधारक एवं राष्ट्रीय नवजागरण के जनक राजा राममोहन राय ने यहाँ से 30 कि. मी. दूरस्थ जिला मुख्यालय चतरा में बिट्रिश काल में सन् 1805–06 ई0 के दौरान **सिरिस्तेदार** के रूप में अपनी सेवा दी थी। चतरा उस समय ब्रिटीश शासन का प्रमुख केन्द्र था।

उल्लेखनीय है कि चतरा 1857 की क्रांति का एक महत्वपूर्ण केन्द्र रहा जहाँ के **फाँसी तालाब** के निकट 2 अक्टूबर 1857 को क्रांतिकारियों का अंग्रेजों से निर्णायक युद्ध हुआ था, जिसमें 150 क्रांतिकारी शहीद हुए और 77 लोगों को अंग्रेजों ने जिन्दा जमीन में दफना दिया था। 4 अक्टूबर 1857 को अंग्रेजों ने सूबेदार जयमंगल पांडेय तथा नादिर अली खान को तालाब के निकट ही फाँसी पर चढ़ा दिया था, जिनकी अमर गाथाएँ आज भी जनमानस में रची–बसी हैं।

झारखण्ड की राजधानी से 150 कि. मी., बोधगया से 70 कि. मी हजारीबाग से 55 कि. मी. उत्तर पश्चिम तथा एन एच 2 (कलकत्ता दिल्ली) स्थित चौपारण से 16 कि. मी. दक्षिण पश्चिम अवस्थित इटखोरी तीन तरफ से मुहाने नदी की धारा से घिरा है। हरे–भरे वनों से आती हवाओं एवं आस–पास के पहाड़ों से झरते झरनों की झर–झर ध्वनि से मानो प्रकृति के सरगम संगीत उठते हैं जिनका श्रवण कर भला कौन मंत्रमुग्ध न हो जाए!

आपको बताते हुए अपार आनंद एवं गौरव का बोध हो रहा है कि ऐसे पावन–मनोरम स्थल की गोद में आगामी दिनांक **19,20 एवं 21, फरवरी 2015** को त्रिदिवसीय इटखोरी महोत्सव का भव्य आयोजन होने जा रहा है जिसमें सनातन हिन्दू, जैन तथा बौद्ध मतावलम्बी भाग लेंगें। इस अवसर पर इटखोरी के **इतिहास, पुरातात्विक महत्व, धार्मिक महात्म्य एवं प्रासंगिकता** विषय पर संगोष्ठी भी आयोजित है जिसे इन विषयों के कई ख्यातिलब्ध विद्वज्जन संबोधित करेंगे।

महोत्सव के माध्यम से इटखोरी के साथ–साथ झारखण्ड के गौरव को विश्व मानचित्र पर प्रतिष्ठित करना भी अपना उद्देश्य है।

Scanned by CamScanner

महोत्सव के कार्यक्रम

19 फरवरी 2015

अपराह्न 3:00 बजे – उद्घाटन • सायं 5:00 से 5:30 बजे सायं– महाआरती • सायं 5:30 से रात्रि 8:30 बजे – सांस्कृतिक कार्यक्रम

20 फरवरी 2015

पूर्वाह्न 11:00 बजे से अपराह्न 1:00 बजे –संगोष्ठी • अपराह्न 2:00 बजे से सायं 5 बजे – मनोरंजक प्रतियोगिता • सायं 5:00 बजे से सायं 5:30 बजे महाआरती • सायं 5:30 से रात्रि 8:30 तक – सांस्कृतिक कार्यक्रम

21 फरवरी 2015

पूर्वाह्न 11:00 बजे से अपराह्न 1:00 बजे –संगोष्ठी • अपराह्न 2:00 बजे से अपराह्न 5:00 बजे – मनोरंजक प्रतियोगिता • सायं 5:00 बजे से सायं 5:30 बजे महाआरती • सायं 5:30 से रात्रि 8:30 तक – सांस्कृतिक कार्यक्रम

विशेष आकर्षण : प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ लेजर शो का प्रदर्शन

नोट : मंदिर परिसर में विभिन्न क्षेत्रों, प्रदेशों और विभागों के द्वारा प्रदर्शनी एवं त्रिदिवसीय मेला का आयोजन भी किया गया है।

इटखोरी कैसे पहुँचे

सड़क मार्ग:– राँची से सड़क मार्ग द्वारा NH-33 से हजारीबाग होते हुए 120 कि.मी दूरी तय कर पद्मा पहुँचे। पद्मा से (इटखोरी मोड़) पश्चिम की ओर इटखोरी के लिए पक्की सड़क गई है। इस मार्ग में 31 कि.मी की दूरी पर इटखोरी स्थित है जहाँ माँ भद्रकाली का मंदिर है। बोधगया (बिहार) से डोभी होते हुए जी. टी. रोड से चौपारण (झारखण्ड) पहुँचे। यहाँ से 19 कि.मी लिंक रोड द्वारा इटखोरी पहुँचने का सुगम रास्ता है।

नजदीकी रेलवे स्टेशन – कोडरमा (दिल्ली – हावड़ा ग्रैट कॉर्ड मार्ग) यहाँ से इटखोरी 50 कि.मी दूरी पर स्थित है। कोडरमा स्टेशन के बाहर टैक्सी सेवा उपलब्ध रहती है।

पारसनाथ (झारखण्ड) :– यह स्टेशन ग्रैंड कॉर्ड रेलवे लाइन पर स्थित है। यहाँ से सड़क मार्ग द्वारा तीन तरफ से इटखोरी पहुँचा जा सकता है।

- पारसनाथ से पीरटाँड–बगोदर–हजारीबाग इटखोरी मोड़ होते हुए 162 कि.मी निजी अथवा भाड़े के वाहन द्वारा इटखोरी पहुँचना सुगम है।
- पारसनाथ से पीरटाँड होते हुए जी.टी. रोड से बरही (80 कि.मी पर माँ भद्रकाली मंदिर स्थित है।
- पारसनाथ से पीरटाँड़ होते हुए 102 कि.मी. चलकर चौपारण पहुँचे। यहाँ से लिंक रोड द्वारा 19 कि.मी पर माँ भद्रकाली मंदिर स्थित है।

हवाई मार्ग:– नजदीकी हवाई अड्डा :– गया (बिहार) यहाँ से 70 कि.मी की दूरी पर इटखोरी स्थित है। गया से निजी/भाड़े के वाहन द्वारा जी.टी. रोड होते हुए इटखोरी पहुँचा जा सकता है।

राँची (झारखण्ड)– राँची से हजारीबाग होते हुए 150 कि.मी की दूरी पर इटखोरी स्थित है जहाँ निजी अथवा भाड़े के वाहन से सुगमता पूर्वक पहुँचा जा सकता है। रांची के लिए नई दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, पटना, बंगलोर से हवाई सेवा उपलब्ध है।

Scanned by CamScanner

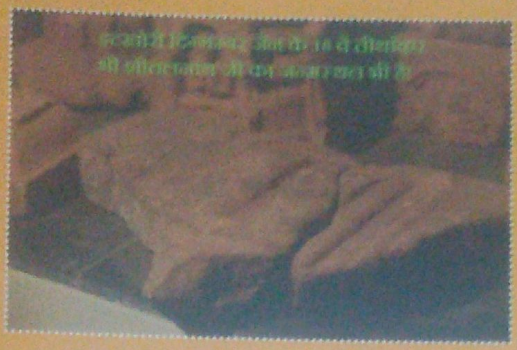

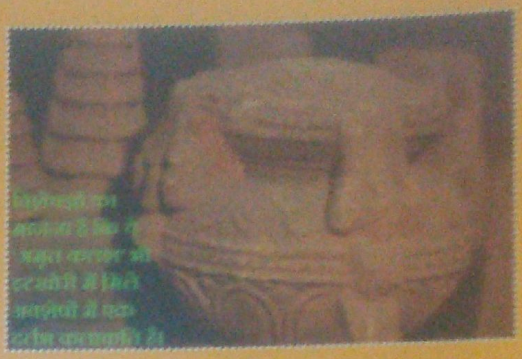

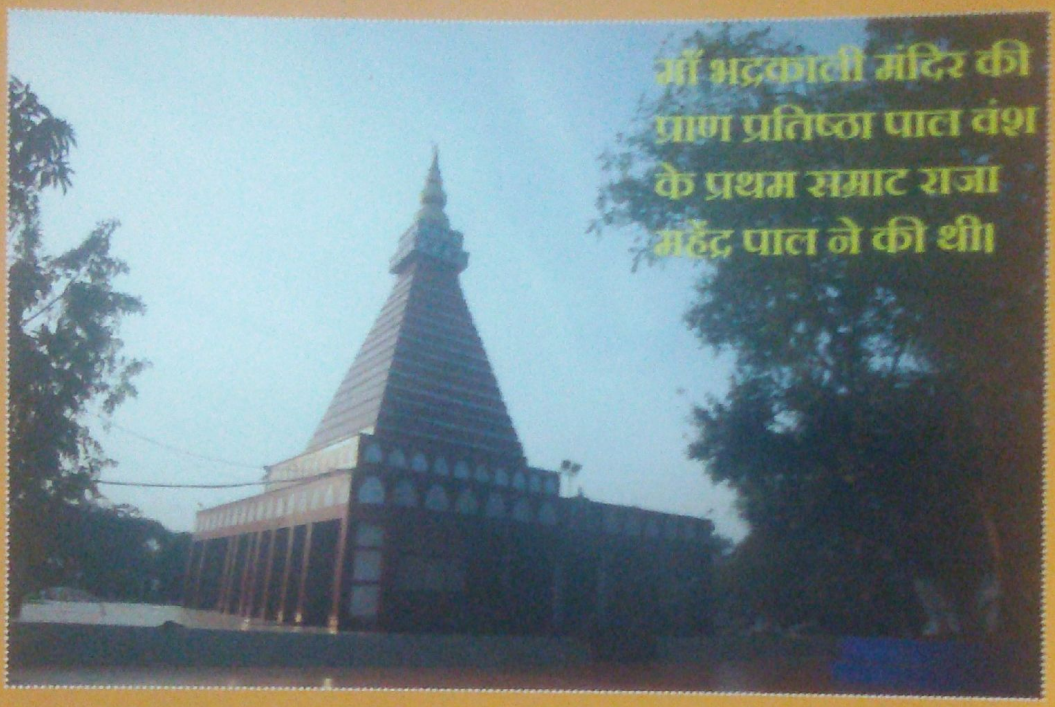

माँ भद्रकाली मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा पाल वंश के प्रथम सम्राट राजा महेंद्र पाल ने की थी।

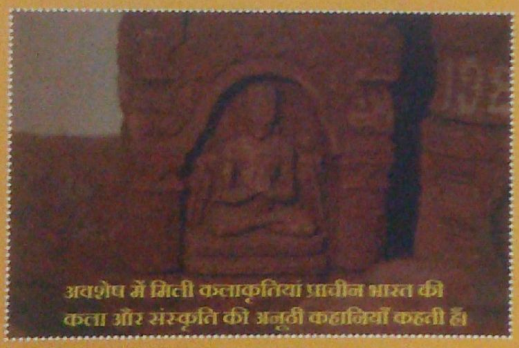

अवशेष में मिली कलाकृतियां प्राचीन भारत की कला और संस्कृति की अनूठी कहानियाँ कहती हैं।

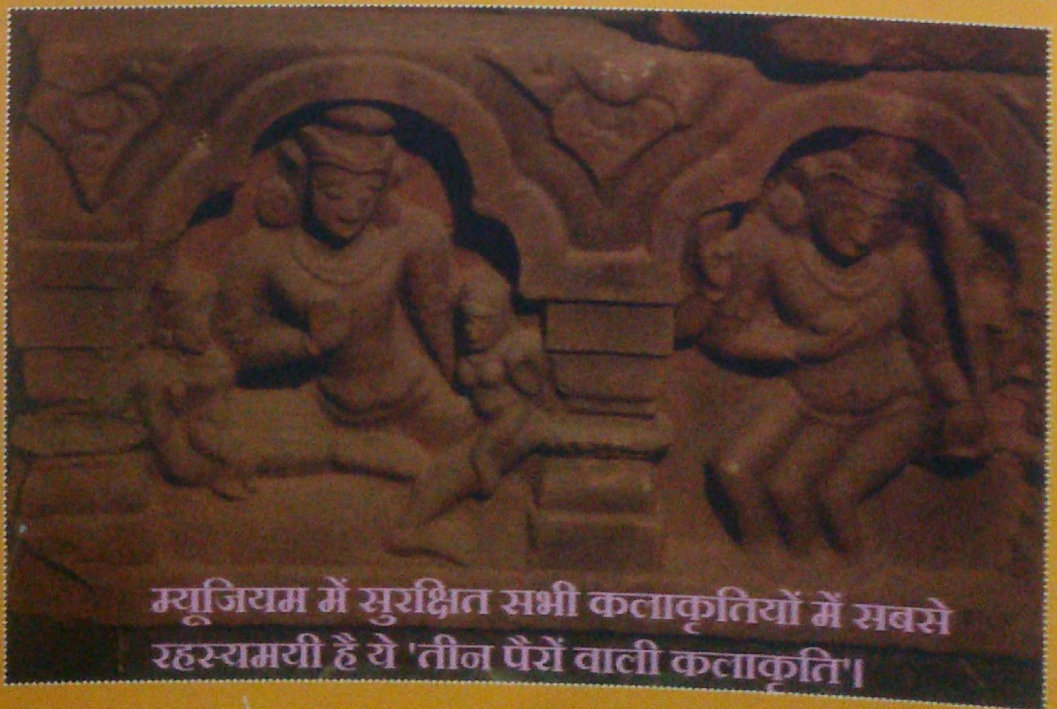

म्यूजियम में सुरक्षित सभी कलाकृतियों में सबसे रहस्यमयी है ये 'तीन पैरों वाली कलाकृति'।

Scanned by CamScanner